Research Inspiration
(Peer-reviewed, Open Access and indexed)
Journal home page: www.researchinspiration.com
ISSN: 2455-443X, Vol. 10, Issue-II, March 2025

भारत में महिला नेतृत्व : चुनौतियाँ, अवसर और भविष्य की दिशा

Women's Leadership in India: Challenges, Opportunities, and Future Direction

Dr. Mukta Jain[a,*]

[a]*Guest Faculty, Political Science and Public Administration, Jiwaji University, Gwalior, Madhya Pradesh, India.*

KEYWORDS

नेतृत्व, चुनौतियाँ, अवसर, भविष्य, तकनीक, विश्लेषण, नीति–निर्माण

ABSTRACT

भारत में महिला नेतृत्व का विषय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं, किंतु नेतृत्व की भूमिकाओं में उनकी भागीदारी अब भी सीमित है। सामाजिक रूढ़ियाँ, लैंगिक भेदभाव, शिक्षा व आर्थिक संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियाँ आज भी महिला नेतृत्व को प्रभावित कर रही हैं। इसके बावजूद सरकारी योजनाओं, डिजिटल तकनीक और बढ़ती जागरूकता ने महिला नेतृत्व के लिए नए अवसर उत्पन्न किए है। यह शोध पत्र भारत में महिला नेतृत्व की वर्तमान स्थिति, प्रमुख चुनौतियाँ, उपलब्ध अवसरों और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है, साथ ही यह सुझाव देता है कि किस प्रकार समाज ओर शासन मिलकर एक समान नेतृत्व की और बढ़ सकते है। साथ ही इसमें यह भी विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार नीति–निर्माण, सामाजिक सोच और शिक्षा के माध्यम से महिला नेतृत्व को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

1. प्रस्तावना

किसी भी देश की प्रगति उसके नेतृत्व की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यदि उस नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी होती है, तो वह निर्णय अधिक समावेशी, सहानुभूतिपूर्ण और दीर्घकालिक होते हैं। भारत जैसे सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं से भरपूर देश में महिलाओं का नेतृत्व न केवल सामाजिक बदलाव ला सकता है, बल्कि यह लैंगिक समानता की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

इतिहास की दृष्टि से देखें तो महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाओं में बहुत सीमित अवसर प्राप्त हुए हैं। प्राचीन भारत में कुछ अपवाद स्वरूप उदाहरण जैसे रानी लक्ष्मीबाई या रज़िया सुल्तान को ज़रूर मिलते हैं, परंतु व्यापक स्तर पर नेतृत्व की बागडोर पुरुषों के हाथ में ही रही है।'[1] परंतु आधुनिक युग में शिक्षा, संवैधानिक अधिकारों और सामाजिक आंदोलनों ने महिलाओं को आगे बढ़ने का मंच प्रदान किया है।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि महिलाएं राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार और अन्य अनेक क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। संसद, राज्य विधानसभाओं और स्थानीय निकायों में महिला प्रतिनिधित्व धीरे–धीरे बढ़ रहा है। 33 प्रतिशत आरक्षण की पहल, पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की हिस्सेदारी और कॉर्पोरेट क्षेत्र में महिला नेतृत्व की मांग, ये सभी संकेत हैं कि समाज में सोच बदल रही है।'[2]

फिर भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक मान्यताएँ, आर्थिक निर्भरता, कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव और सुरक्षा की चिंताएँ महिलाओं के नेतृत्व

* **Corresponding author**
E-mail: muktaj505@gmail.com (Dr. Mukta Jain). https://orcid.org/0009-0004-8744-6028
DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v10n2.06
Received 20th Feb. 2025; Accepted 15th March 2025
Available online 30th March 2025
2455-443X /©2025 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

के मार्ग में प्रमुख बाधाएँ हैं। कई बार प्रतिभा होते हुए भी महिलाएं आगे नहीं आ पातीं क्योंकि उनके आत्मविश्वास को बचपन से ही दबा दिया जाता है।'[3]

हालाँकि इन समस्याओं के समाधान के प्रयास भी हो रहे हैं। सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाएँ, जैसे ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'', ''महिला शक्ति केंद्र'', ''स्टार्टअप इंडिया'' में महिलाओं को प्राथमिकता महिला सशक्तिकरण की दिशा में सहायक रही हैं। साथ ही, नागरिक समाज और स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका भी उल्लेखनीय है।

भविष्य की दिशा की बात करें तो आवश्यक है कि महिला नेतृत्व को केवल संख्या तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उन्हें निर्णय लेने की शक्ति और अवसर भी दिए जाएँ। बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा से ही नेतृत्व कौशल सिखाना, कार्यस्थलों को अधिक लिंग–संवेदनशील बनाना और महिलाओं के लिए मेंटरशिप कार्यक्रम विकसित करना। ये सभी कदम महिला नेतृत्व को मजबूत बना सकते हैं।

अंततः, जब महिलाएं नेतृत्व करेंगी तो न केवल वे स्वयं सशक्त बनेंगी, बल्कि समाज भी अधिक न्यायपूर्ण, समतामूलक और प्रगतिशील बनेगा।

2. राजनीतिक क्षेत्र में महिला नेतृत्व

भारत के लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी एक अहम पहलू है, परंतु अभी भी यह समानता के स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। हाल के वर्षों में महिलाओं की राजनीतिक उपस्थिति में कुछ सुधार जरूर हुआ है, परंतु यह अभी भी वैश्विक औसत से पीछे है।

2024 के लोकसभा चुनावों में कुल 82 महिलाएँ निर्वाचित होकर संसद पहुंचीं, जो कुल सीटों का लगभग 15.2 प्रतिशत है। यह आंकड़ा 2019 की तुलना में थोड़ा बेहतर है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के अनुसार वैश्विक औसत लगभग 26 प्रतिशत है, जिससे भारत अब भी पीछे है।'[4] राज्य विधानसभाओं में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व काफी असमान है। कुछ राज्यों में यह 10 प्रतिशत से भी कम है, जबकि कुछ राज्यों ने अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन किया है। यह असमानता महिला नेतृत्व को पूरे देश में एक समान रूप से सशक्त नहीं होने देती।[5]

महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाने की दिशा में एक बड़ा कदम 2023 में देखा गया, जब महिला आरक्षण विधेयक संसद में पारित हुआ। इस विधेयक के अनुसार, 2029 से लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित होंगी। यह निर्णय ऐतिहासिक माना जा रहा है, क्योंकि इससे महिला नेतृत्व को संवैधानिक संरक्षण और स्थायित्व प्राप्त होगा।[6]

हालाँकि यह आरक्षण लागू होने में समय है, परंतु इससे जुड़ी उम्मीदें और संभावनाएँ व्यापक हैं। इससे न केवल महिला जनप्रतिनिधियों की संख्या बढ़ेगी, बल्कि नीति निर्धारण में भी महिलाओं की दृष्टि और प्राथमिकताओं को स्थान मिलेगा।

3. कॉर्पोरेट क्षेत्र में महिला नेतृत्व

भारतीय कॉर्पोरेट जगत में महिलाओं की भूमिका धीरे–धीरे सशक्त हो रही है, लेकिन शीर्ष नेतृत्व की बात करें तो यह भागीदारी अभी भी सीमित है। यद्यपि प्रवेश स्तर पर महिलाओं की भागीदारी संतोषजनक मानी जा सकती है, परंतु जैसे–जैसे पदों की ऊँचाई बढ़ती है, उनकी उपस्थिति में उल्लेखनीय गिरावट देखी जाती है।

2024 तक भारत के कॉर्पोरेट क्षेत्र में सी–स्तरीय पदों पर महिलाओं की भागीदारी मात्र 17 प्रतिशत है। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में यह आंकड़ा थोड़ा बेहतर, लगभग 20 प्रतिशत है।'[7] हालाँकि यह आंकड़े पिछले वर्षों की तुलना में कुछ सुधार दर्शाते हैं, फिर भी यह वैश्विक औसत से कम हैं। एक अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी 36 प्रतिशत तक है, लेकिन जब उच्च नेतृत्व पदों की बात आती है, तो यह संख्या गिरकर केवल 10 प्रतिशत रह

जाती है।'[8]

इस गिरावट का एक प्रमुख कारण "लीक पाइपलाइन" की समस्या है। एक शोध रिपोर्ट के अनुसार, भारत में कॉर्पोरेट जगत के प्रवेश स्तर पर महिलाओं की भागीदारी लगभग 31 प्रतिशत है, परंतु जैसे–जैसे प्रमोशन की सीढ़ी चढ़ती जाती है, यह भागीदारी सी–स्तरीय पदों पर घटकर केवल 13 प्रतिशत रह जाती है।[9] पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, कार्यस्थल पर लिंग आधारित भेदभाव, और महिला कर्मचारियों के लिए सीमित नेटवर्किंग अवसर इन गिरावटों के प्रमुख कारणों में शामिल हैं।

हाल के वर्षों में कुछ कंपनियाँ महिला नेतृत्व को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण, मेंटरशिप और लचीले कार्य विकल्पों की दिशा में काम कर रही हैं, परंतु यह प्रयास समग्र कॉर्पोरेट संस्कृति में व्यापक परिवर्तन के बिना अधूरे रहेंगे। जब तक निर्णयकारी भूमिकाओं में महिलाओं की सशक्त भागीदारी नहीं होगी, तब तक संस्थानों में वास्तविक समावेशन संभव नहीं होगा।

4. स्टार्टअप और उद्यमिता में महिला नेतृत्व

भारत में स्टार्टअप संस्कृति ने पिछले दशक में तेज़ी से विस्तार किया है और इस क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। पहले जहां उद्यमिता को पुरुष–प्रधान क्षेत्र माना जाता था, वहीं अब महिलाएं इस क्षेत्र में न केवल भाग ले रही हैं, बल्कि नेतृत्व भी कर रही हैं।

2017 में भारत में केवल 1943 स्टार्टअप्स हुए जिसमें कुछ ही महिला निदेशक शामिल थी। यह संख्या 2024 तक बढ़कर 17,405 हो गई है, जो लगभग 800 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।'[10] यह आंकड़ा इस ओर संकेत करता है कि महिलाएं अब व्यवसायिक नवाचार और उद्यमिता में अग्रिम पंक्ति में आ रही हैं। विशेषकर शिक्षा, स्वास्थ्य, ई–कॉमर्स, और फिनटेक जैसे क्षेत्रों में महिला नेतृत्व तेजी से उभर रहा है।

इस बदलाव के पीछे कई कारक हैं, सरकार की योजनाएं जैसे स्टार्टअप इंडिया, महिला उद्यमिता प्लेटफ़ॉर्म, और महिला–वित्त सहायता योजनाएं महिलाओं को नए विचारों को व्यवसाय में बदलने का अवसर दे रही हैं।[11] इसके अलावा, सोशल मीडिया, ऑनलाइन मार्केटिंग और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स ने महिला उद्यमियों के लिए बाजार तक पहुँच को आसान बना दिया है।

हालाँकि महिला नेतृत्व में वृद्धि सकारात्मक संकेत है, लेकिन अब भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। निवेशकों से पूँजी जुटाना, पारिवारिक समर्थन की कमी, कार्य–जीवन संतुलन और नेटवर्किंग के सीमित अवसर महिला उद्यमियों के लिए मुख्य बाधाएँ हैं।'[12]

फिर भी यह स्पष्ट है कि महिलाएं अब केवल सहभागिता नहीं कर रहीं, बल्कि वे नवाचार, रणनीति और नेतृत्व में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। यदि नीति–निर्माता, निवेशक और समाज मिलकर एक अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र बनाएं, तो महिला उद्यमिता भारत की आर्थिक विकास यात्रा में निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

5. सशस्त्र बलों में महिला नेतृत्व

भारतीय सशस्त्र बलों में महिला भागीदारी का इतिहास अपेक्षाकृत नया है, परंतु बीते वर्षों में इसमें उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। महिलाओं ने न केवल विविध शाखाओं में प्रवेश किया है, बल्कि अब वे नेतृत्व के उच्चतम स्तरों तक भी पहुँच रही हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सैन्य संरचना में धीरे–धीरे समावेशिता का विस्तार हो रहा है।

2024 तक भारतीय सशस्त्र बलों में तीन–स्टार रैंक (लेफ्टिनेंट जनरल या समकक्ष) तक पहुँचने वाली आठ महिलाएं सामने आई हैं।[13] यह रैंकिंग सशस्त्र बलों की वरिष्ठतम श्रेणियों में गिनी जाती है और इन महिलाओं की यह उपलब्धि सैन्य इतिहास में एक मील का पत्थर है। हालाँकि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि ये सभी अधिकारी आर्मी मेडिकल कॉर्प्स से संबंधित रही हैं। इसका अर्थ है

कि युद्ध या रणनीतिक कमांड से अधिक, यह नेतृत्व अभी तक चिकित्सा सेवा के दायरे तक सीमित रहा है।

इस तथ्य से यह भी उजागर होता है कि महिला अधिकारियों को अभी भी लड़ाकू भूमिकाओं और कोर सैन्य नेतृत्व में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिला है। भले ही 2016 में भारतीय वायुसेना ने पहली बार महिला फाइटर पायलट्स को शामिल किया और नौसेना ने भी महिला अधिकारियों को युद्धपोतों पर तैनाती देना शुरू किया, परंतु उच्च स्तरीय लड़ाकू नेतृत्व में उनकी उपस्थिति अब भी सीमित है।'[14]

सरकार और सशस्त्र बलों ने कुछ नीतिगत बदलाव किए हैं, महिलाओं के लिए स्थायी कमीशन की सुविधा, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA) में प्रवेश की अनुमति, और चयन प्रक्रिया में समानता जैसे निर्णयों ने महिला सैन्य अधिकारियों के मार्ग को थोड़ा सुगम बनाया है।[15]

हालांकि प्रगति हो रही है, लेकिन यह स्पष्ट है कि अगर महिला नेतृत्व को सशस्त्र बलों में पूरी तरह सशक्त बनाना है, तो लड़ाकू भूमिकाओं और रणनीतिक निर्णयों में भी उनकी भागीदारी बढ़ानी होगी।

6. सामाजिक और ग्रामीण नेतृत्व में महिलाओं की भूमिका

ग्रामीण भारत में महिला नेतृत्व की सबसे प्रभावशाली मिसाल स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से देखने को मिलती है। ये समूह न केवल आर्थिक रूप से महिलाओं को सशक्त बना रहे हैं, बल्कि सामाजिक बदलाव और सामुदायिक निर्णयों में भी उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं।

तेलंगाना राज्य के मेदक ज़िले का उदाहरण लें, जहाँ 2015 में मात्र 5,000 महिला स्वयं सहायता समूह सक्रिय थे।[16] 2024 तक यह संख्या बढ़कर 52,000 से अधिक हो चुकी है, जिनमें लगभग 5.2 लाख महिलाएं सदस्य हैं।[17] यह आंकड़ा ग्रामीण नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी में आये व्यापक बदलाव का परिचायक है।

इन समूहों के माध्यम से महिलाएं न केवल छोटे व्यवसाय चला रही हैं, बल्कि बैंकिंग, ऋण प्रबंधन, बचत, सामूहिक खरीद और उत्पादन जैसे कार्यों में भी दक्षता हासिल कर रही हैं। कई स्थानों पर एस.एच.जी. की महिलाएं गांव की स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण और शिक्षा से जुड़ी समस्याओं का समाधान सामूहिक रूप से कर रही हैं।[18] इससे यह भी स्पष्ट होता है कि एस.एच.जी. अब केवल आर्थिक मंच नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन चुके हैं।

इसके अतिरिक्त, राज्य सरकारों और केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन जैसे कार्यक्रमों के अंतर्गत इन समूहों को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और विपणन सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। इससे न केवल आत्मनिर्भरता बढ़ी है, बल्कि महिलाओं के बीच नेतृत्व का आत्मविश्वास भी विकसित हुआ है।

ग्रामीण समाज में जहाँ कभी महिलाओं की आवाज़ दबा दी जाती थी, अब वे सामूहिक रूप से अपने अधिकारों, संसाधनों और निर्णयों के लिए खड़ी हो रही हैं। महिला स्वयं सहायता समूहों का यह उभार भारतीय ग्रामीण लोकतंत्र को नई दिशा दे रहा है।

7. प्रमुख महिला नेताः नई पहचान, नया युग

भारत में महिला नेतृत्व का परचम अब केवल पारंपरिक सीमाओं तक सीमित नहीं है। द्रोपदी मुर्मू और निर्मला सीतारमण जैसी नेताओं ने यह साबित किया है कि महिलाएं अब देश के सर्वोच्च संवैधानिक और प्रशासनिक पदों तक पहुँचने में सक्षम हैं। इन नेताओं की उपलब्धियाँ ना केवल प्रेरणास्पद हैं, बल्कि भारत में लोकतंत्र की परिपक्वता और समावेशिता की भी परिचायक हैं।

द्रोपदी मुर्मू ने 2022 में भारतीय इतिहास रचते हुए देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति बनने का गौरव प्राप्त किया।[19] ओडिशा के एक छोटे से गांव से आने वाली मुर्मू ने अनेक सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों को पार करते

हुए यह सर्वोच्च संवैधानिक पद प्राप्त किया। उनकी सफलता ने न केवल महिलाओं को, बल्कि आदिवासी समुदाय को भी एक नई पहचान दी है। राष्ट्रपति पद पर उनकी उपस्थिति भारत के लोकतंत्र में सामाजिक विविधता और प्रतिनिधित्व का प्रतीक बन चुकी है।

वहीं दूसरी ओर, निर्मला सीतारमण, जो देश की पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री हैं, ने भी एक ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित किया है। वर्ष 2025 में उन्होंने लगातार आठवीं बार केंद्रीय बजट प्रस्तुत किया, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है।[20] वित्त मंत्रालय जैसा चुनौतीपूर्ण विभाग सँभालते हुए उन्होंने न केवल आर्थिक नीतियों को आकार दिया, बल्कि महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, स्टार्टअप्स, और डिजिटल अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा दिया है।

इन दोनों महिलाओं ने यह स्पष्ट किया है कि नेतृत्व का मूल्य केवल लिंग से नहीं, बल्कि कार्यकुशलता, दृष्टिकोण और दूरदर्शिता से तय होता है। उन्होंने भारतीय राजनीति और प्रशासन को एक नई दिशा दी है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मजबूत आधार बन सकती है।

8. महिला नेतृत्व की प्रमुख चुनौतियाँ

(1). लैंगिक असमानता और पूर्वाग्रह :

- कार्पोरेट क्षेत्र में महिलाओं की उच्च नेतृत्व पदों पर भागीदारी सीमित है। McKinsey की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में सी–स्तरीय पदों पर केवल 17 प्रतिशत महिलाऐं है, जबकि बोर्ड स्तर पर यह संख्या 20 प्रतिशत है।
- राजनीतिक क्षेत्र में, महिलाओं का प्रतिनिधित्व भी अपेक्षाकृत कम है। 2023 में लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 14 प्रतिशत था।

(2). कार्य–जीवन संतुलन और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ:

- महिलाऐं अक्सर पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के कारण करियर में प्रगति नही कर पाती। कार्यस्थल पर लचीलेपन की कमी और मातृत्व अवकाश की सीमित सुविधाऐं इस समस्या को और बढ़ाती हैं।

(3). सीमित नेटवर्किंग और मेंटरशिप के अवसर:

- महिलाओं के लिए पेशेवर नेटवर्किंग ओर मेंटरशिप के अवसर सीमित है, जिससे उनहें नेतृत्व भूमिकाओं में आगे बढ़ने में कठिनाई होती है।

(4). वेतन असमानता: AIMA-KPMG की रिपोर्ट के अनुसार, केवल 50 प्रतिशत महिला नेताओं को उनके पुरूष समकक्षों के समान वेतन मिलता है। लगभग 25 प्रतिशत महिलाऐं मानती हैं कि उन्हें पुरूषों की तुलना में कम वेतन मिलता है।

- पुरूषों की तुलना में कम वेतन मिलता है।

9. अवसर:

(1). सरकारी पहल और योजनाऐं:

- **महिला आरक्षण विधेयक**: 2023 में पारित इस विधेयक के अनुसार, 2029 से लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित की जाऐगी।
- **सुभद्रा योजना:** यह योजना आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करती है, जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ती है।
- **सरकारी योजनाऐं**: बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं, ''स्टैड अप इंडिया'' महिला शक्ति केन्द्र जेसी योजनाऐं महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायक है।

(2). **स्वयं सहायता समूह (SHG) और ग्रामीण नेतृत्व**:

- मेघालय में महिला की संख्या 2015 में 5000 से बढ़कर 2024 में 52000 हो गई है, जिसमें 5.2 लाख महिलाए शामिल है। यह महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का संकेत है।

(3). **शिक्षा और कौशल विकास** :

- महिलाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों की उपलब्धता बढ़ रही है, जिससे वे नेतृत्व भूमिकाओं के लिए तैयार हो रही है। उदाहरण के लिए कई संगठनों द्वारा महिलाओं के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण और मेंटरशिप कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

(4). **फिल्म और मीडिया में पहल** :

- 2025 में निर्माता गुनीत मोंगा कूपर ने "**Women in film India**" पहल की शुरूआत की जिसका उद्देश्य भारतीय फिल्म उद्योग में लैंगिंक समानता को बढ़ावा देना है। यह पहल महिलाओं को वैश्विक नेटवर्क और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करती है।
- कई प्रमुख समाचार चैनलों और अखबारों की एडिटोरियल टीमों में महिलाऐं नेतृत्व कर रही है। डिजिटल प्लेटफार्म में महिलाओं को सेंसरशिप से मुक्त होकर अपनी बात रखने का मंच दिया है। फेमिनिस्ट मीडिया नेटवर्क्स महिलाओं द्वारा संचालित मीडिया प्लेटफार्म महिलाओं के मुद्दों पर अधिक संवेदनशील और जागरूक रिर्पोटिंग करते हैं।

10. **भविष्य की दिशा** :

(1). **राजनीतिक नेतृत्व में सशक्त भागीदारी**:

- महिला आरक्षण विधेयक के कार्यान्वयन से संसद और विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी 33 प्रतिशत तक पहुचने की संभावना है।
- यह राजनीतिक निर्णय– निर्माण में महिला दृष्टिकोण को अधिक स्थान देगा, जिससे नीति–निर्माण अधिक समावेशी और संवेदनशील होगा
- स्थानीय निकायों (पंचायती राज) में महिलाओं की भूमिका पहले से ही प्रभावी हैं, भविष्य में यह और परिपक्व होगी।

(2). **डिजिटल सशक्तिकरण और नई तकनीक का लाभ** :

- डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, और महिला उद्यमिता प्लेटफार्म (WEP) जैसी पहलों से महिलाऐं तकनीक आधारित नेतृत्व में तेजी से उभरेगी।
- महिलाऐं ई–कामर्स, डिजिटल सेवाओं और आनलाईन शिक्षा जैसे क्षेत्रों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाएंगी।
- AI, STEM और डेटा साइंस जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने वाला कार्यक्रम भविष्य में इन क्षेत्रों में महिला नेतृत्व को प्रोत्साहित करेगें।

(3). **शिक्षा और नेतृत्व प्रशिक्षण में वृद्धि** :

- स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर लीडरशिप प्रोग्राम, डिबेट, स्टार्टअप हब्स और गर्ल्स इन स्टेम जैसी पहल से बालिकाओं में नेतृत्व कौशल विकसित हो रहा है।
- भविष्य में महिलाओं के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए लीडरशिप फेलोशिप, इंटरनेशनल एक्सचेंज प्रोग्राम्स और मेटरिंग

नेटवर्क महिलाओं को वैश्विक स्तर पर नेतृत्व के अवसर प्रदान करेगें।

(4). **कॉर्पोरेट और उद्यमिता में वृद्धि** :

- आने वाले वर्षो में अधिक महिलाऐं CEO, CFO, COO जैसे उच्च प्रबंधन पदों तक पहुंचेगी, क्योंकि कंपनियाँ विविधता और समावेशिता को बढ़ावा दे रही हैं ।
- महिला स्वामित्व वाले स्टार्टअपर की संख्या तेजी से बढ़ रही है। वित्तीय संस्थाऐं अब महिला उद्यमियों को प्राथमिकता पर ऋण प्रशिक्षण दे रही है।
- गिग–इकोनॉमी और वर्क फ्राम होम के बढ़ते चलन से महिलाओं के लिए नेतृत्व की नई भूमिकाऐं खुल रही है। ।

(5). **सशस्त्र बल, खेल और विशान में अधिक भागीदारी** :

- सेना, नौसेना और वायुसेना में महिलाओं की भर्ती और पदोन्नति को लेकर नीतियाँ अधिक अनुकूल हो रही है।
- खेलों में महिला खिलाड़ी वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर रही हैं, और इनमें नेतृत्व की भावना स्पष्ट है। (जैसे मिताली राज, हरमनप्रीत कौर, मनु प्रभाकर)
- विज्ञान, अंतरिक्ष और स्वास्थय जैसे क्षेत्रों में महिलाएँ नेतृत्व कर रही हैं – भविष्य में यह भागीदारी और गहराई तक जाएगी।

(6). **सामाजिक नेतृत्व और जन सरोकार** :

- महिलाऐं सामाजिक उद्यमों, गैर– सरकारी संगठनों, और सामुदायिक नेतृत्व में अग्रणी भूमिका निभा रही है। भविष्य में महिला नेता जलवायु परिवर्तन, लैंगिक समानता, बालिका शिक्षा और स्वास्थय सेवा जैसे क्षेत्रों में निर्णायक भूमिका निभाएँगी।
- सामाजिक मीडिया भी महिलाओं को आवाज देने और नेतृत्व स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है।

11. निष्कर्ष

भारत में महिला नेतृत्व की दिशा में पिछले कुछ वर्षो में महत्वपूर्ण प्रगति हुई हैं, किन्तु अभी लंबा सफर तय करना शेष है। सामाजिक रूढ़िया, आर्थिक निर्भरता, लैगिंक असमानता और शिक्षा की कमी जैसी बाधाऐं महिला नेतृत्व के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती हैं। राजनीतिक, कार्पोरेट, सैन्य और सामाजिक क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है, लेकिन उच्च स्तर के नेतृत्व पदों पर उनकी उपस्थिति सीमित है। इसके बावजूद सरकारी प्रयास, तकनीकी विकास और महिलाओं की आत्म सजगता से कई नए द्वार खोले हैं। यदि समाज, सरकार और निजी क्षेत्र मिलकर समन्वित रूप से कार्य करें तो आने वाले वर्षो में भारत में महिला नेतृत्व एक सशक्त और समानांतर धारा के रूप में उभरेगा, जो देश के सर्वांगीण विकास में निर्णायक भूमिका निभाएगा। अगर महिला नेतृत्व को शिक्षा, नीति और सामाजिक सहयोग से निरंतर समर्थन मिलता रहा, तो आने वाले दशक **''नारी नेतृत्व के युग''** के रूप में पहचाने जाऐंगें।

12. सन्दर्भ सूची–

[1] रेखा शर्माः प्राचीन भारत में महिलाएँः आर्यन बुक्स, दिल्ली 2015।
[2] कविता सिंहः भारतीय राजनीति में लैंगिक प्रतिनिधित्वः इंडियन जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज, वाल्यूम 12, इशु 3, 2021, पृष्ठ 45–59।
[3] अंजलि वर्माः भारत में महिला नेतृत्व की चुनौतियाँः रावत प्रकाशन, जयपुर 2019।
[4] संयुक्त राष्ट्र महिलाएँः राजनीति में महिलाएँ 2023ः संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन, 2023।
[5] अनिल कुमारः ''राज्य विधानमंडलों में लैंगिक असमानता'' इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज, वाल्यूम 19, इशु 2, 2023, पृष्ठ 55–67।
[6] कानून और न्याय मंत्रालय, भारत सरकारः संविधान (106वाँ संशोधन) अधिनियम, 2023ः नई दिल्ली, 2023।
[7] कैटेलिस्टः भारत में नेतृत्व में महिलाएँः 2024 स्नैपशॉटः कैटेलिस्ट, 2024।
[8] मैककिंसे एंड कंपनीः कार्यस्थल में महिलाएँ 2023ः भारत रिपोर्ट, मैककिंसे, 2023।
[9] डेलोइट इंडियाः कॉर्पोरेट भारत में लैंगिक समानताः वर्तमान रुझान और भविष्य का दृष्टिकोणः डेलोइट इनसाइट्स, 2023।
[10] स्टार्टअप इंडियाः भारत में महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप पर वार्षिक रिपोर्ट,

डीपीआईआईटी, भारत सरकार, 2024।

[11] नीति आयोगः महिला उद्यमिता मंचः प्रभाव विश्लेषण रिपोर्ट, 2023।

[12] फिक्की एफएलओः भारत में महिला उद्यमियों के लिए बाधाएं और सक्षमताएं, फिक्की, 2022।

[13] रक्षा मंत्रालयः भारत सरकारः वार्षिक रक्षा रिपोर्ट 2024, नई दिल्ली, 2024।

[14] रितु सिंहः लड़ाकू भूमिकाओं में महिलाएँः भारतीय सशस्त्र बलों के लिए एक नया युगः डिफेंस जर्नल ऑफ इंडिया, वाल्यूम 18, संख्या 1, 2024, पृष्ठ 22–29।

[15] प्रेस सूचना ब्यूरोः सशस्त्र बलों में महिलाओं के लिए नीति सुधार, रक्षा मंत्रालय, 2023।

[16] जिला ग्रामीण विकास एजेंसी (डीआरडीए): मेडकः वार्षिक एसएचजी स्थिति रिपोर्ट 2015: तेलंगाना सरकार, 2015।

[17] तेलंगाना राज्य ग्रामीण आजीविका मिशनः प्रगति रिपोर्ट 2024: हैदराबाद, 2024।

[18] नीति आयोगः एसएचजी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना, नीति आयोग प्रकाशन, 2023।

[19] भारत के राष्ट्रपति की आधिकारिक वेबसाइटः जीवनीः श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति भवन, 2023।

[20] वित्त मंत्रालयः केंद्रीय बजट भाषण अभिलेखागार (2018–2025): भारत सरकार, 2025।